अनोखा इलाज

(कहानी)

12

एक नगर में रहते थे एक सेठ। नाम तो उनका गरीबदास था पर वे बिल्कुल भी गरीब न थे। उनके पास ढेर सारा धन था और बहुत-सी अचल संपत्ति।

सेठ जी को सारी सुख सुविधाएँ उपलब्ध थीं। लेकिन एक दुःख सभी सुखों को मिट्टी बना रहा था। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। उन्होंने अनगिनत बीमारियाँ पाल रखी थीं।

धीरे-धीरे सेठ जी का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। बड़े-बड़े डॉक्टरों के इलाज से भी कोई लाभ नहीं हुआ। काबिल वैद्य और हकीम भी फेल हो गए। मर्ज बढ़ता ही गया। सेठ जी और उनके परिवार वाले परेशान थे। नौकर-चाकर भी चिंतित थे। रोग ऐसा था कि ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

निराश होकर सेठ जी ने घोषणा करवाई कि जो भी उन्हें ठीक करेगा उसे मुँहमाँगा इनाम दिया जाएगा। इनाम के लालच में कई डॉक्टर और वैद्य आए। इलाज भी किया लेकिन सेठ जी की दशा ज्यों की त्यों बनी रही।

एक दिन सुबह एक बूढ़े हकीम सेठ जी के पास आए। उनकी नब्ज देखी। शरीर की जाँच-पड़ताल की। नौकरों को अलग ले जाकर कुछ पूछा। रसोइए से भी चुपचाप बातें कीं। अब सेठ जी से पूछने की बारी थी।

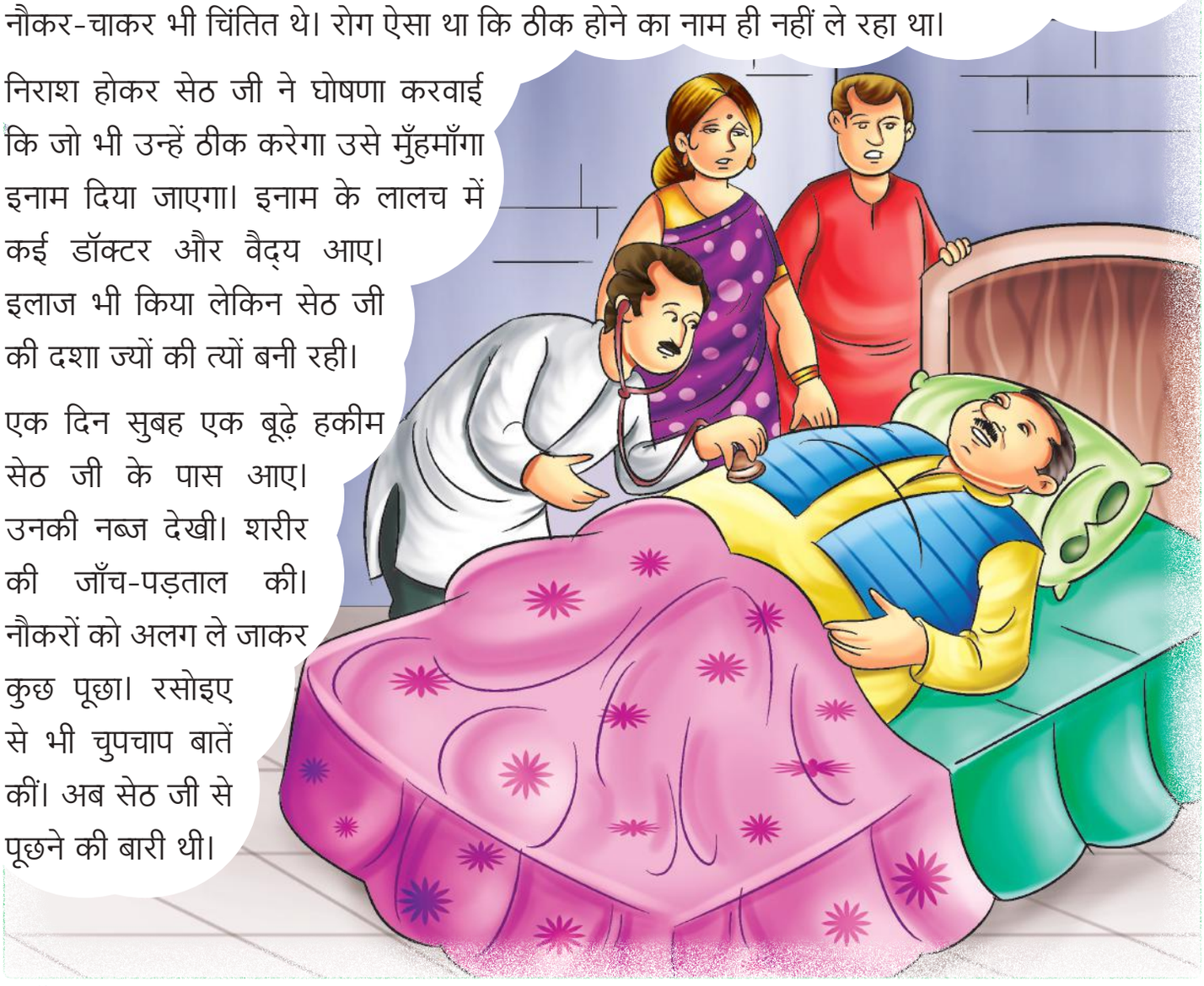

हकीम जी मुस्कराते हुए बोले, "सेठ जी! आपके पास इतनी दौलत है पर लगता है आप खाने-पीने में काफी कंजूसी करते हैं।"

"खाने-पीने में कंजूसी! भला क्यों?" सेठ जी चौंके।

"ठीक से खाते-पीते तो बीमार क्यों पड़ते? खैर, छौड़िए। अपनी खुराक के बारे में बताइए।"

"खुराक तो मैं ठीक ही लेता हूँ। सवेरे आठ खस्ता कचौड़ी, पकौड़े, एक कटोरा हलुआ, एक कटोरी मलाई, कुछ सूखे मेवे व एक लोटा दूध नाश्ते में और दोपहर को ……।

"ठहरिए। इतना सुनकर ही मेरे मुँह में पानी आने लगा। दोपहर और शाम की खुराक इससे दो गुनी ज्यादा तो होगी ही।" हकीम जी बीच में बोल पड़े।

"आपका अनुमान ठीक है। पूड़ी और पराँठे मुझे बेहद पसंद हैं। डटकर खाता हूँ। फिर भी समझ में नहीं आता कि चलते-चलते मेरा दम क्यों फूलने लगता है।" सेठ जी बोले।

हकीम जी ने कहा, "आप बिल्कुल ठीक हो जाएँगे पर इलाज शुरू करने से पहले मैं कुछ बातें साफ करना चाहूँगा।"

"कहिए, आप क्या कहना चाहते हैं?" सेठ जी ने पूछा।

"अच्छी तरह सोच लीजिएगा, मेरे इलाज पर आप नाराज तो नहीं होंगे। इलाज यहाँ से दूर एक सुनसान जगह पर किया जाएगा।" हकीम जी ने कहा।

"भला मैं इससे नाराज क्यों होऊँगा। शहर से बाहर मेरी एक कोठी है। कल सवेरे ही आप वहाँ मेरा इलाज शुरू कर सकते हैं।" सेठ जी बोले।

अब हकीम जी ने अपने साथ लाए हुए आदमी को अलग ले जाकर इलाज के बारे में समझाया। फिर वे वहाँ से चले गए।

हकीम जी वक्त के पाबंद थे। सुबह होती ही सेठ जी के यहाँ आ पहुँचे। उनका सहायक पहले से ही इलाज की तैयारी करने के लिए वहाँ पहुँच चुका था।

हकीम जी निर्जन कोठी तक पैदल पहुँचना चाहते थे, पर सेठ जी न माने। वे बोले, "क्या कह रहे हो? चार कदम चलने पर तो मेरा दम फूलने लगता है, आप कोठी तक पैदल चलने को कह रहे हैं। इतना पैदल मैं हरगिज न चल पाऊँगा। पाँच-पाँच गाड़ियाँ खड़ी हैं। गाड़ी से चलते हैं, पाँच मिनट में पहुँच जाएँगे।"

हकीम जी ने पैदल चलने की अधिक जिद न की। दोनों गाड़ी में बैठकर कोठी पर पहुँचे। हकीम जी वहाँ पहुँचते ही सहायक से पूछने लगे, "क्या इलाज की सारी तैयारियाँ हो गई हैं?"

सहायक ने स्वीकृति में सिर हिलाया और पीछे वाले कमरे की ओर संकेत किया। आगे-आगे सेठ जी और पीछे-पीछे हकीम जी उस कमरे की ओर चल पड़े। कमरे के बाहर उनके जूते उतरवा दिए गए। नंगे पैर जैसे ही सेठ जी उस कमरे में घुसे, हकीम जी ने फुर्ती से बाहर से साँकल बंद कर दी।

अब सेठ जी कमरे के अंदर, हकीम जी बाहर। अंदर जाते ही न जाने क्या हुआ, सेठ जी जोरों से चिल्लाने और नाचने-कूदने लगे। बात यह थी कि कमरे का फर्श तवे की तरह तप रहा था। उस पर नंगे पैर टिकाए ही नहीं जा रहे थे। बंद कमरा, तपता फर्श, नंगे पैर। अब सेठ जी उछलने-कूदने के सिवा क्या करें? हकीम जी कमरे के बाहर थे। वह चुपचाप खड़े थे। गाड़ी के चालक को भी भेज दिया गया था। कोई शरारती बच्चा यदि सेठ जी के मोटे थुलथुल शरीर को इस प्रकार उछलता-कूदता देखता तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाता। लगभग एक घंटे तक वे इसी तरह उछलते-कूदते रहे। उनका शरीर पसीने से लथपथ हो गया। सेठ जी थक कर चूर हो गए। अब धीरे-धीरे फर्श की तपन कम होने लगी। सेठ जी का उछलना-कूदना भी उसी हिसाब से कम होता गया। सेठ जी हकीम जी को जी भर कर कोस रहे थे। पर कमरे के बाहर खड़े हकीम जी पर इसका कोई असर नहीं हो रहा था।

पूरे एक घंटे बाद हकीम जी ने उस कमरे का दरवाजा खोला। पसीने से लथपथ, बदहवास सेठ जी, हकीम जी को गालियाँ बकते, बड़बड़ाते हुए बाहर निकले। हकीम जी धैर्य की मूर्ति बने सब सुनते रहे। उन्होंने सेठ जी को एक पेड़ की छाया में बैठाया। कुछ देर विश्राम करने के बाद सेठ जी को लगा कि उनकी तबीयत अब कुछ ठीक हो रही है। तब हकीम जी बोले, "सेठ जी, मैंने तो पहले ही कहा था कि आप किसी बात का बुरा

नहीं मानेंगे। पहले आप चार कदम भी न चल पाते थे, अब पूरा एक घंटा उछलते-कूदते रहे। आप खुराक तो अच्छी लेते हैं, पर शारीरिक श्रम बिल्कुल नहीं करते, व्यायाम नहीं करते। यही आपकी बीमारी का कारण है। यदि आप कम खाएँ और नियमित रूप से व्यायाम व योगासन करें, तो शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएँगे। मुझे आप माफ कीजिए क्योंकि आपके इलाज के लिए मुझे कुछ सख्त कदम उठाने पड़े।"

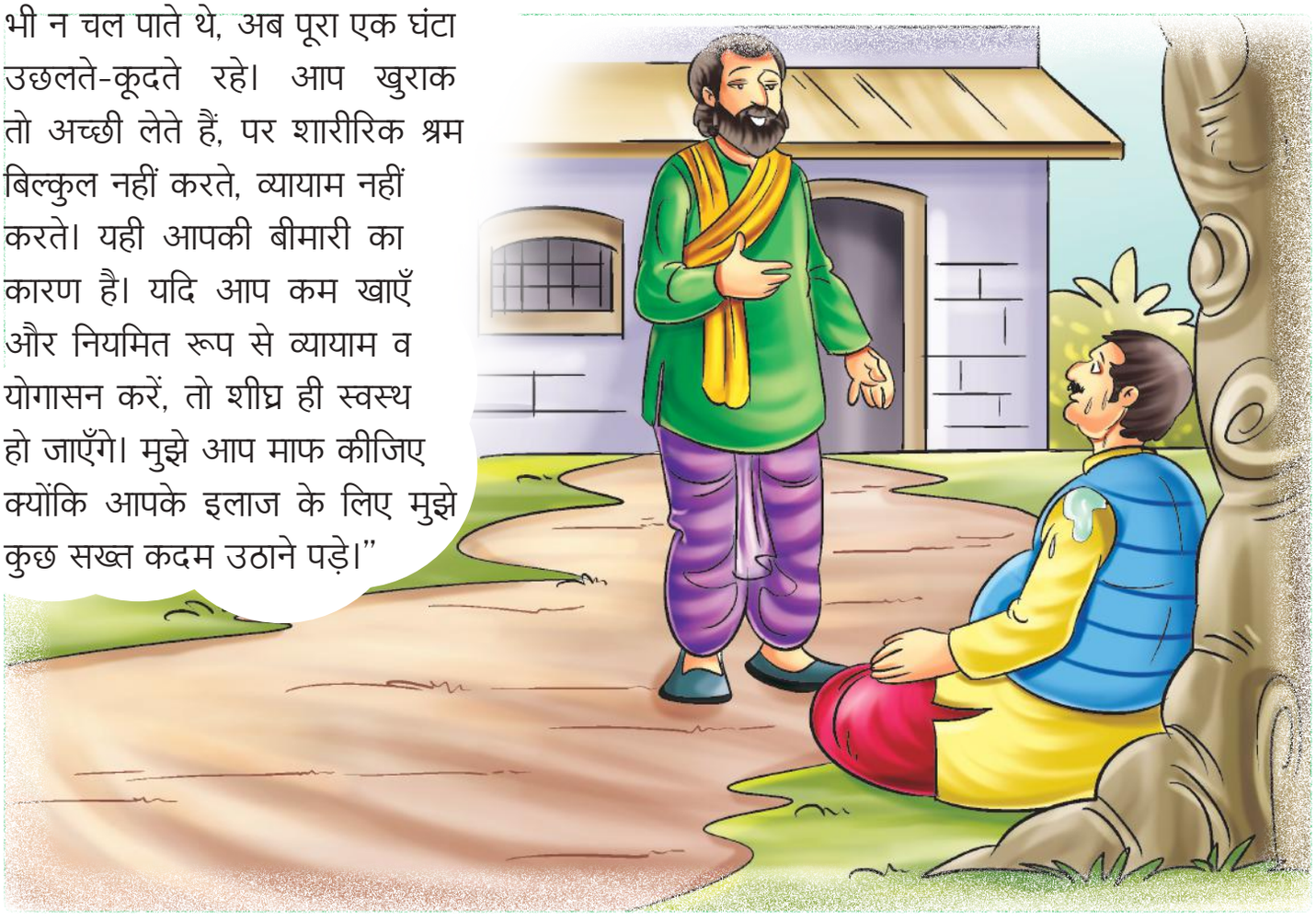

अब सेठ जी का क्रोध कुछ शांत हो गया था। हकीम जी की सम्मति को उन्होंने स्वीकार कर लिया। उचित खानपान और नियमित व्यायाम से वे कुछ ही दिनों में पूर्ण स्वस्थ हो गए। अब हकीम जी से उनकी रही-सही नाराजगी भी मिट गई। वे हकीम जी के मित्र बन गए और उनकी प्रशंसा करने लगे।

शब्द-अर्थ

अचल संपत्ति — स्थिर दौलत *(immovale property)*,
मर्ज — बीमारी *(illness)*,
दशा — हालत *(situation)*,
पाबंद — किसी बात का नियम से पालन करना *(confine)*,
धैर्य — धीरज *(patience)*,
श्रम — मेहनत *(effort)*,
नियमित — नियम से *(regular)*,
योगासन — योग के आसन *(breathing)*।
स्वास्थ्य — सेहत *(health)*,
घोषणा — ऐलान *(announcement)*,
निर्जन — सुनसान *(desolate)*,
स्वीकृति — मंजूरी *(accept)*,
विश्राम — आराम *(rest)*,
व्यायाम — कसरत *(gymnastics)*,
सम्मति — राय *(council)*,

अभ्यास

मौखिक

1. इन शब्दों को पढ़कर सुनाइए–

अनगिनत	मर्ज	दौलत	हरगिज	स्वीकृति
तवे	प्रंशसा	पूर्ण	फुर्ती	सख्त

2. निम्नलिखित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए–

(क) सेठ जी का क्या नाम था?

(ख) सेठ जी को क्या बीमारी थी?

(ग) बाद में सेठ जी हकीम की क्या करने लगे?

(घ) सुबह के समय सेठ जी के पास कौन आए?

(ङ) सेठ जी क्या नहीं करते थे?

लिखित

1. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए–

(क) सेठ जी बीमार रहते थे, क्योंकि:–

☐ वे खूब डटकर खाते थे, पर व्यायाम तनिक भी न करते। ☐ उन्हें कोई छूत की बीमारी लग गई थी।

☐ उन्हें खाने का बहुत शौक था। ☐ वे दवाई समय पर नहीं खाते थे।

(ख) कमरे का फर्श गर्म किया गया ताकि:–

☐ सेठ जी बैठ न सकें ☐ चलते फिरते रहें

☐ एक स्थान पर खड़े न रहें ☐ सभी सही हैं

(ग) सेठ जी कमरे में उछल-कूद रहे थे क्योंकि:–

☐ फर्श गर्म था ☐ फर्श पर काँटे बिछे थे

☐ कमरे में विषैले जीव-जंतु थे ☐ फर्श पर कंकरीली रोड़ी बिछी थी

2. वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) सेठ जी को सारी ..... उपलब्ध थीं।

(ख) एक दिन सुबह एक बूढ़े ..... सेठ जी के पास आए।

(ग) ..... और ..... मुझे बेहद पसंद हैं।

(घ) सेठ जी ..... के सिवा क्या करें?

(ङ) उचित ..... और नियमित ..... से वे कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो गए।

3. सही वाक्यों के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) सेठ जी का नाम अमीर दास था। ☐

(ख) सेठ जी बीमार थे। ☐

(ग) सेठ जी को देखने बहुत-से डॉक्टर आए। ☐

(घ) सेठ जी का इलाज बूढ़े हकीम ने किया। ☐

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सेठ जी क्यों दुःखी थे?

(ख) डाक्टर या वैद्य, सेठ जी का इलाज क्यों नहीं कर पाए?

(ग) हकीम जी ने सेठ जी के इलाज के लिए क्या शर्त रखी?

(घ) हकीम जी ने सेठ जी का इलाज कैसे किया?

(ङ) सेठ जी हकीम पर क्यों नाराज हुए?

भाषा-ज्ञान

- पाठ पढ़कर इन शब्दों के विलोम लिखिए–

(क) अस्वस्थ - ..... (ख) निश्चित - .....

(ग) प्रसन्न - ..... (घ) अस्वीकृत - .....

(ङ) निंदा - ..... (च) अनुचित - .....

क्रियात्मक गतिविधि

- चिकित्सा के लिए कौन-कौन सी पद्धति प्रचलित हैं, इनके बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
- पाठशाला के योग-शिक्षक से अपनी आयु के अनुकूल कुछ योगासन सीखकर उन्हें नियमित रूप से करने का अभ्यास कीजिए।
- विज्ञान की अध्यापिका की सहायता से अपने वर्ग के छात्रों के लिए संतुलित आहार का एक चार्ट तैयार कर कक्षा में टाँगिए।